

अयि गिरिनंदिनि

अयि गिरिनंदिनि नंदित-मेदिनि, विश्व-विनोदिनि नंदनुते
गिरिवर-विंध्य-शिरोधि-निवासिनि विष्णु-विलासिनि विष्णुनुते ।
भगवति हे शितिकंठ-कुटुंबिनि भूरी-कुटुंबिनि भूरिकृते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१॥ (३)

सुरवर-वर्षिणि दुर्धरधर्शिणि दुर्मुख-मर्षिणि हर्षरते
त्रिभुवन-पोषिणि शंकरतोषिणि किल्मिष-मोषिणि घोषरते ।
दनुज-निरोषिणि क्षिति-सुत-रोषिणि दुर्मुद-शोषिणि सिंधुसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥२॥ (३)

अयि शत-खंड-विखंडित-रुंड-वितुंडित-शुंड-गजाधिपते
रिपु-गज-गंड-विदारण-चंड-पराक्रम-शौंड-मृगाधिपते ।
निज-भुजदंड-निपातित-चंड-विभातित-मुंड-भटाधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥३॥ (३)

धनुरनुसंग-रण-क्षण-संग-परिस्फुरदंग-नटत्कटके
कनक-पिषंग-पुषत्क-निषंग-रसद्-भट-शृंगहतावटुके ।
कृत-चतुरंगबल-क्षितिरंग-घटद्-बहुरंग-रटद् बटुके
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥४॥ (३)

जय-जय-जप्य-जय जय-शब्द-पर-स्तुति-तत्पर-विश्वनुते
झन-झन-झिंझित-झिंकृत-नूपुर-सिंजित-मोहित-भूतपते ।
नटित-नटार्थ-नटी-नट-नायक-नाटित-नाट्य-सुगानरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥५॥ (३)

अयि सुमनस्-सुमनस्-सुमनस्-सुमनस्-सुमनोहर-कांन्तियुते
श्रित्-रजनी-रजनी-रजनी-रजनी-रजनीकर-वक्र-वृते ।
सुनयन-विभ्रमर-भ्रमर-भ्रमर-भ्रमर-भ्रमराधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥६॥ (३)

सहित-महार्णव-मल्ल-मतल्लिक-मल्लित-सल्लिक-मल्लरते
विरचित-वल्लिक-पल्लिक-मल्लिक-भिल्लिक-भिल्लिक-वर्गवृते।
सितकृत-फुल्ल-समुल्लसितारूण-तल्लज-पल्लव-सल्ललिते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकूपर्दिनि शैलसुते ॥७॥ (३)

कमल-दलामल-कोमल-कांति-कला-कलिकामल-भाललते
सकल-विलास-कला-निलय-क्रम-केलि-चलत्-कलहंस कुले ।
अलि-कुल-संकुल-कुवलय-मंडल-मौलि-मिलद्-बकुलालिकुले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकूपर्दिनि शैलसुते ॥८॥ (३)

ॐकारस्वरूपा

ॐकार स्वरूपा..... ३

तुज नमो.... ३

ॐकार स्वरूपा सद्गुरू समर्था, २

अनाथांच्या नाथा तुज नमो...३

नमो मायबापा, गुरु कृपाघना

तोडिया बन्धना माया मोहा

मोहजाल माझे, कोण निरशील

तुजवीण दयाळा, सद्गुरुराया

तुज नमो....३ ॐकार स्वरूपा..... ॥१॥

सद्गुरुराया माझा, आनन्द सागर

त्रैलोक्या आधार, गुरुराव ३

गुरुराव स्वामी, असे स्वयं-प्रकाश.... आ आ आ २

ज्यापुढे उदास, चन्द्र रवी ३

रवी, शशी, अग्नी, नेणति ज्या रूपा

स्वप्रकाशरूपा, नेणे वेद ३

तुज नमो....५

॥२॥

एका जनार्दनी, गुरु परब्रह्म

तयाचे पै नाम, सदा मुखी

तुज नमो ५ ॐ कार स्वरूपा